दिनांक 22/04/2020

स्नातकोत्तर हिन्दी (सम्मान) द्वितीय सत्रार्द्ध

पत्र संख्या – 06

बिहारी के दोहों की व्याख्या

1. मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई ।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित-दुति होई ॥

व्याख्या :- बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं और 'बिहारी-सतसई' मुक्तक काव्य परंपरा का उत्कर्ष। 'बिहारी-सतसई' की संवेदना का विस्तार भक्ति से लेकर नीति तक है, लेकिन निर्विवाद रूप से प्रधानता शृंगार की है। हिन्दी साहित्य जगत् में बिहारी की पहचान भी शृंगारी कवि के रूप में ही है, लेकिन वह शृंगार भक्ति से सर्वथा असंपृक्त नहीं है और न ही सर्वत उनका भक्त व्यक्तित्व शृंगार से दबा हुआ है।

उपरोक्त दोहा जो 'बिहारी-सतसई' से उद्धृत है जिसका संपादन जगन्नाथ दास रत्नाकर के द्वारा किया गया है:
बिहारी ने इस दोहे से सतसई की शुरुआत करके भारतीय परिपाटी का निर्वाह किया है। यहाँ बिहारी उस राधा से सांसारिक बाधाओं को हरने का आग्रह करते हैं जो नगर में निवास करती हैं और जिनके रूप का आभास मात्र को पाकर साँवले वर्ण वाले श्री कृष्ण का चेहरा खिल जाता है, प्रफुल्लित हो जाता है।

कृष्ण के प्रफुल्लित होने का कारण है प्रेमिकाओं में राधा का विशेष प्रिय होना। कृष्ण के बारे में किंवदंती है कि कृष्ण की सोलह हजार पटरानियाँ थी, लेकिन कृष्ण और राधा की जोड़ी अविस्मरणीय है। इस दोहे में राध के साथ 'नागरी' विशेषण का प्रयोग नागरिक जीवन और नगरीय संस्कृति के प्रति बिहारी के विशेष रुझान का संकेत देता है, जिसके कारण बिहारी को 'नागरता का कवि' भी कहा जाता है। दूसरी बात यह है कि यहाँ पर एक भक्त की आर्त पुकारों को सुना जा सकता है। ऐसे भक्त का आकुल अन्तर जो रीतिवादी मानसिकता से भी ग्रस्त है। 'स्यामु हरित द्युति होई' में रंग-चमत्कार की संभावनाएँ विद्यमान हैं। मतलब यह कि कृष्णवर्ण के भगवान श्रीकृष्ण पर जैसे ही राधा के गौर वर्ण की आभा पड़ती है, कृष्ण की श्यामता पृष्ठभूमि में चली जाती है और सुनहली आभा उत्पन्न होती है।

2. दोहा :- अपने अंग के जानि कै जोबन-नृपति प्रवीन।
स्तन, मन, नैन, नितंब की बड़ी इजाफा कीन॥

व्याख्या :- मंगलाचरण में शामिल किए गए इस दोहे के बाद बिहारी सीधे दूसरे छोर पर चले जाते हैं, जो माधुर्योपासना को यक प्रतिस्थापित करती हुई शृंगारोपासना को प्रतिष्ठित करता है। इस दूसरे दोहे में बिहारी वयः संधि की दहलीज से गुजर रही मुग्धा नायिका के चित्त को लेकर उपस्थित होते हैं।

नवयौवना किशोरावस्था की दहलीज को पारकर यौवनावस्था में प्रवेश कर रही है। इस क्रम में होने वाले उसके शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों को लक्षित करता हुआ नायक कहता है कि यौवन रूपी राजा ने नायिका को अपनी ही प्रजा या सहायक जानकर उस पर अपनी कृपा की बरसात कर दी। इसके कारण उसका देह भरा-भरा नजर आने लगता है। लेकिन नायिका में ये परिवर्तन केवल तन के धरातल पर ही परिलक्षित नहीं होता वरन् इन परिवर्तनों को मन के धरातल पर भी देखा जा सकता है। इन मानसिक परिवर्तनों के बिना शारीरिक परिवर्तनों का वैसा सौन्दर्य नहीं उभर पाता। यहाँ पर मानसिक परिवर्तनों से संकेत लज्जा आदि भावों के आगमन से है। साथ ही, इन पर नए-नए भावों से भी जो विपरित लिंगियों के प्रति अनायास आकर्षित होने के लिए सहज ही विवश करता है। यहाँ पर बिहारी ने मुग्धा नायिका के चित्र को उभारने के लिए यौवन रूपी राजा और नारी देह रूपी राज्य के रूपक का इस्तेमाल किया है। 'जौबन नृपति' में उपमेय और उपमान की समानांतरता के कारण रूपक अलंकार है। बिहारी शृंगार चित्रण के क्रम में अपनी दृष्टि नायिका के उन अंगों पर केन्द्रित कर देते हैं जो कामोत्तेजना में सहायक है। यही कारण है कि आचार्य शुक्ल ने बिहारी के शृंगार चित्रण की

सीमाओं का संकेत करते हुए कहा कि "जो हृदय की आंतरिकता की चाह रखते हैं, उनका संतोष बिहारी से नहीं हो सकता।" 'यह बिहारी की सीमा नहीं, उनके युग की सीमा है और सामंती-दरबारी संस्कृति की जरूरतों का परिणाम है। यह नारी के प्रति मध्ययुगीन भोगवादी दृष्टि का संकेत देता है, और ऐसे प्रेम का भी, जो दायित्वहीन है।

दोहा संख्या (13):-

जोग-जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय-अद्वैतता कानन सेवत नैन॥

व्याख्या:- इस दोहे में बिहारी उस नायिका के चित्त को लेकर उपस्थित होते हैं जिसके तन और मन में यौवन उतर आया है। नायिका की सखी नवयौवना मुग्धा के नेत्रों के सौन्दर्य और बढ़ाव को देखकर प्रशंसामूलक लहजे में कहती है कि अब तुम्हारे नयन रूपी योगी श्रवण रूपी कानन का सेवन करने लगे। ऐसा लगता है कि महामुनि मदन ने तुम्हारी आँखों को योग की सारी युक्तियाँ सीखा दी हैं जिसके कारण तुम्हारी आँखें पिया के साथ मिलन और अद्वैत की चाह में कानन (वन) (तपोवन) का सेवन करने लगी।

निश्चय ही तुम्हारी प्रियतम तुम्हारी इस चिरप्रतीक्षा भरी तपस्या को निष्फल नहीं होने देगा। व्यंजना यह है कि यौवन के विकास के साथ आँखों का बढ़कर कानों

तक पहुँचना प्रतीक्षा भरे विरह का संकेत देता है। ऐसी स्थिति में सखियाँ नायिका को ढाढ़स देती हुई प्रिय से मिलन का आश्वासन देती हैं।

बिहारी के दोहे संयोग शृंगार की बालपक्ष के चित्र को उपस्थित करते हैं।

दिनांक
22/07/2020

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(बि BRABU MUZAFFARPUR)
मो० - 8292271041
ईमेल - benamkumar13@gmail.com